

India-Portugal: Joint Issue

India and Portugal enjoy excellent bilateral relationships with frequent and active interaction through different platforms that allows both countries to exchange views on many issues of common concerns. The countries today share warm and friendly ties with close political, cultural and people to people ties. Portugal and India also cooperate actively in multilateral fora including support for each other's candidatures. The collaborations have been fruitful and beneficial for both countries and the ties of both countries continue to grow from strength to strength over the years.

To explore the new possibilities of development in postal operations and to promote Philately in both countries, the India-Portugal Joint stamp issue is being released. Both the countries have mutually agreed upon depicting the Folk Dances of both the countries – Dandiya Dance for India and Pauliteiros Dance for Portugal.

Dandiya Dance:

Dandiya dance is featured and most popular dance of Navratri evenings in the Indian State of Gujarat. It is performed specially during Navratri because of the significance it holds. It was originated as devotional dance, which was always performed in Goddess Durga's honor. It is the dramatization of a mock fight between the Goddess and Mahishasura - the mighty demon-king. The sticks of the dance represent the sword of Durga. Women normally perform it in a graceful and rhythmic manner in a circle as they rotate around the 'mandvi'.

In Dandiya Dance, attired in colorful costumes men and women dance in two circles, with colorful sticks in their hands. The women wear traditional dresses glittering with mirror work and heavy jewelry, while men look very attractive in their traditional colorful costumes. During the dance, dancers energetically whirl and move their feet and arms in a complicated, choreographed manner to the tune of the music with a lot of drum-beats in various rhythms. The dhol is used as percussion instrument along with the dholak, tabla, bongos etc.

Dandiya dance is known for setting the festive mood. Today, the dance form is not just restricted to Gujarat. It is performed in many other states all over the country, during the festive season of Navratri.

Pauliteiros:

The Pauliteiros are those who practice a dance typical of Terras de Miranda, in the northeast of Portugal. The dance is carried out by group of men which includes eight dancers and three musicians, who wear an outfit composed of an embroidered skirt and linen shirt, brown waistcoat, leather boots, woolen socks and a hat, usually decorated with flowers. They perform a complex choreography using sticks to the sound of the bagpipe, the snare drum and a brass drum or the "flauta pastoral" (a traditional recorder) and castanet – the Lhaco.

Lhaco is the name given in the Mirandese Language to each of the melodies, including text and choreography, that part of the Pauliteiros dance. The words to the lhacos are mostly in Mirandese, although some are in Spanish or Portuguese.

The Pauliteiros often represent Terras de Miranda at events abroad, but the true origin of this dance is not known. It may have appeared in Transylvania during the Iron Age, a sword dance that spread through Central Europe until it reached the Iberian Peninsula. There are references alluding to the fact that, later, the Celtiberian's performed these dances before battles, substituting the swords for sticks. Romans, Suebi and Visigoths also upheld this tradition, associated with fertility rituals during agricultural cycles. By the tenth century, the Christian Church adopted this dance during festivals in honor of saints, which were made to correspond to periods of solstice and equinox. The Pauliteiros travelled the villages, taking part in processions and gathering alms. They still take their collection in this way today.

Department of Posts is pleased to release a set of two Commemorative Postage Stamps on theme India-Portugal Joint Issue featuring 'Dandiya Dance' of India and 'Pauliteiros Dance' of Portugal.

Credits:-

Text : Based on the material received from Portugal Post and available on internet

Stamp/Miniature Sheet : Sh. Subir Das
/FDC/Brochure

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

विवरणिका BROCHURE



भारत और पुर्तगाल : संयुक्त डाक टिकट
INDIA - PORTUGAL : JOINT ISSUE

भारत-पुर्तगाल : संयुक्त डाक-टिकट

भारत और पुर्तगाल के द्विपक्षीय संबंध अत्यंत मधुर रहे हैं और दोनों ही देश विभिन्न मंचों के जरिए एक-दूसरे से निरंतर और सक्रिय रूप से संवाद करते रहते हैं, जिससे दोनों देशों को एक-दूसरे के सरोकारों से जुड़े कई विषयों पर विचारों के आदान-प्रदान का अवसर प्राप्त होता रहा है। आज दोनों देशों के बीच इन मैत्रीपूर्ण संबंधों का दायरा राजनैतिक, सांस्कृतिक और नागरिकों के बीच दोस्ताना जुड़ाव तक विस्तृत है। पुर्तगाल और भारत, बहुपक्षीय मंचों पर भी सक्रिय रूप से सहयोग करते हैं और विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में एक-दूसरे की उम्मीदवारी का पूरा समर्थन करते हैं। इस प्रकार का सहयोग दोनों ही देशों के लिए अत्यंत लाभदायक रहा है और विगत वर्षों के दौरान भारत-पुर्तगाल की यह मैत्री और गहरी हुई है।

डाक प्रचालन के विकास के क्षेत्र में नई संभावनाओं की तलाश करने और दोनों देशों में फिलैटली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, भारत और पुर्तगाल का यह संयुक्त डाक-टिकट जारी किया जा रहा है। दोनों देशों ने संयुक्त डाक-टिकट पर एक-दूसरे के लोक नृत्यों अर्थात भारत का डांडिया नृत्य और पुर्तगाल के पॉलिटिओस नृत्य का अंकन करने पर परस्पर सहमति व्यक्त की है।

डांडिया नृत्य :

डांडिया नृत्य, भारत के गुजरात प्रांत का अत्यंत लोकप्रिय नृत्य है। यह नृत्य, नवरात्रि उत्सव के दौरान संध्या समय में किया जाता है। नवरात्रि के दौरान इस नृत्य को किए जाने का अपना ही महत्व है। इसका आरंभ मां दुर्गा की अराधना में किए जाने वाले भक्ति नृत्य के रूप में हुआ। वास्तव में, इस नृत्य के माध्यम से, देवी दुर्गा और बलशाली राक्षसराज महिषासुर के बीच हुए युद्ध का नाटकीय मंचन किया जाता है। इस नृत्य में इस्तेमाल होने वाली डांडिया दरअसल मां दुर्गा की तलवार का प्रतीक होती है। यह नृत्य करते हुए महिलाएं अत्यंत मनोहर ढंग से लयबद्ध रूप में एक 'मांडवी' के इर्द-गिर्द घूमती हैं।

डांडिया की इस मोहक शैली के अंतर्गत पुरुष एवं महिलाएं रंग-बिरंगी पोशाक पहन हाथों में आकर्षक रंगों से सजी डांडियां लेकर दो अलग-अलग घेरों में घूमते हुए नृत्य करते हैं। महिलाएं, शीशे जड़ी चमकदार पारम्परिक पोशाकें तथा भारी आभूषण पहनती हैं, जबकि पुरुष अपने पारंपरिक और रंग-बिरंगे पहनावे में खूब सजते हैं। इस नृत्य के दौरान, नर्तक पूरे उत्साह और ऊर्जा से घूमते हुए, अपने पैरों और हाथों को अत्यंत जटिल मुद्राओं में, ढोल की ताल से उठती जोश भरी धुनों पर लहराते हैं। डांडिया में ढोल के साथ-साथ ढोलक, तबला, बोंगो आदि वाद्ययंत्रों का भी इस्तेमाल किया जाता है।

डांडिया नृत्य, वातावरण को उत्सवमय बनाने के लिए जाना जाता है। आज यह नृत्य शैली मात्र गुजरात तक सीमित नहीं है। डांडिया का यह नृत्य अब नवरात्रि त्यौहार के दौरान देशभर के कई अन्य राज्यों में भी बड़े शौक से किया जाता है।

पॉलिटिओस :

पॉलिटिओस उन लोगों को कहा जाता है जो पुर्तगाल के पूर्वोत्तर क्षेत्र स्थित टैरास डी मिरांडा का खास किस्म का स्थानीय नृत्य करते हैं। यह नृत्य पुरुषों के समूह द्वारा किया जाता है। इस समूह में आठ नर्तक और तीन संगीतकार शामिल होते हैं। ये कलाकार विशेष किस्म की पोशाक पहनते हैं, जिसमें कढ़ाई से सजी स्कर्ट और लिनेन की कमीज, भूरे रंग का वेस्ट कोट, चमड़े के बूट, ऊन की जुराबें और अत्यंत आकर्षक ढंग से फूलों से सजाई गई टोपी शामिल होती है। ये नर्तक और संगीतकार छोटी डांडियों का इस्तेमाल कर बैग्पाइप, स्नेर ड्रम और ब्रास ड्रम या "फ्लाटा पैस्टोरल" (पारम्परिक रिकार्डर) और कैस्टानेट की धुन पर ल्हाको नामक बेहद जटिल कोरियोग्राफी प्रस्तुत करते हैं।

मिरांडाई भाषा में ल्हाको नाम पॉलिटिओस नृत्य प्रदर्शन में शामिल प्रत्येक धुन को दिया गया नाम है। इस धुन के अंतर्गत, इसके बोल और इसकी कोरियोग्राफी दोनों शामिल होते हैं। ल्हाको के बोल मुख्यतः मिरांडाई भाषा में ही लिखे जाते हैं, परन्तु कुछेक ल्हाकों स्पेनी या पुर्तगाली भाषा में होते हैं।

पॉलिटिओस अक्सर विदेशों में होने वाले आयोजनों में टैरास डी मिरांडा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। परन्तु इस नृत्य के आरंभ की कहानी ज्ञात नहीं है। संभवतः इसकी शुरुआत लौह युग के दौरान खड्ग नृत्य के तौर पर ट्रांसिल्वेनिया में हुई और यह यूरोप में लोकप्रियता हासिल करते हुए आइबेरियाई प्रायद्वीप तक पहुंच गया। इस प्रकार के संदर्भ मिले हैं, जो इस तथ्य को रेखांकित करते हैं कि आगे चल कर सेल्टीवेरियन लोग युद्ध से पहले यह नृत्य करते थे परन्तु, वे इसमें तलवारों की जगह डांडियों का इस्तेमाल करते थे। रोमन, सुएबी और विजीगॉथ लोगों ने भी इस परम्परा को जारी रखा और कृषि चक्र के दौरान अच्छी उपज के लिए किए जाने वाला अनुष्ठान माना। 10वीं शताब्दी आते-आते ईसाई धर्म संघ ने इस नृत्य को संतों के सम्मान में अयनांत (सॉलिस्टस) तथा विपुव (इक्विनॉक्स) अर्वाधि के दौरान आयोजित होने वाले उत्सवों के भाग के रूप में स्वीकार कर लिया। पॉलिटिओस गांवों का भ्रमण करते थे और शोभायात्रा में शामिल होकर अन्न, धन आदि का दान मांगते थे। ये नर्तक आज भी इसी प्रकार अन्न-धन एकत्रित करते हैं।

डाक विभाग, भारत के डांडिया नृत्य और पुर्तगाल के पॉलिटिओस नृत्य पर आधारित भारत और पुर्तगाल के दो संयुक्त स्मारक डाक-टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ : पुर्तगाल डाक से प्राप्त एवं इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/मिनियेचर शीट/ : श्री सुबीर दास
प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका



तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा, 2500 पैसा
Denomination	:	500 p, 2500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	3.10 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	:	3.10 Lakh each
मुद्रित मिनियेचर शीट	:	1.10 लाख
Miniature Sheet Printed	:	1.10 Lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00